रु. १०/-

वर्ष: १० • अंक: ११ • नवंबर २००९, युगाब्द ५१०९

केशवसृष्टि समाचार

Total No. of pages : 20

Regn. No. MH/MR/Thane (W) 06/2008-09. Licence to post at Bhayandar (W) on 5th of every month. RN-72232/99

केशव सृष्टि
दीपावली स्नेहमिलन

केशव सृष्टि
दीपावली स्नेहमि

केशवसृष्टि में संपन्न आयोजनों की झलकियाँ

केशवसृष्टि दीपावली स्नेहमिलन

गोपाष्टमी के अवसर पर गोपूजन

केशवसृष्टि दीपावली स्नेहमिलन

गोपाष्टमी के अवसर पर हवन करते हुए गोशाला संचालक मंडल के अध्यक्ष एवं सदस्य

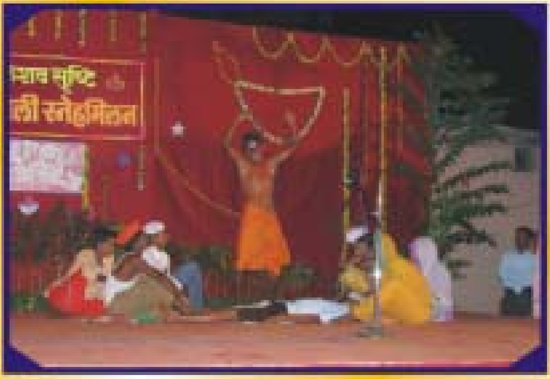

केशवसृष्टि दीपावली स्नेहमिलन

गोपाष्टमी के अवसर पर सुंदरकांड का पाठ करती गोभक्त महिलाएं

बोध-वाक्य

समानो मंत्रः
समितिः समानी
समानं व्रतं
सहचित्तमेषाम् ।
समानेन वो
हविषा जुहोमि
समानं चेतो
अभिसंविशध्वम् ॥

(अथर्व वेद ६.६४.२)

हे बंधुओं! हमारे विचार समान हों । हमारी सभा सबके लिए समान हो । हम सबका संकल्प एक समान हो । हम सबका चित्त एक समान भाव से भरा हो । एक विचार होकर अपने कार्य में एक मन से लगे । इसीलिए हम सबको समान मौलिक शक्ति मिली है ।

केशवसृष्टि समाचार

मासिक

वर्ष १०, अंक ११ मूल्य रु. १०/-
नवंबर २००९ वार्षिक रु. ५०/-

संपादक : सत्यदेव बंका
कार्यकारी संपादक : जगदिश्चंद्र पाटील
संपादक मंडल : शोभाताई थिटे, विजय धुलप, भरत बोहरा, सबिता शिंदे, सुमिता बोरसे।
कार्यालय : केशवसृष्टि, उत्तन, भाईंदर, जि. ठाणे.
दूरभाष : २८४५०२४७, २८४५२८५५
यह पत्रिका मुद्रक एवं प्रकाशक
सुरेश भगेरिया द्वारा केशवसृष्टि के लिए
युनिटी आर्ट ऑफसेट
३०२, वडाला उद्योग भवन, वडाला, मुंबई - ३१
से मुद्रित और केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, जि. ठाणे
से प्रकाशित हुई है.

अंतरंग .....

कार्यवाह की कलम से ४
समाचार ५
कि. गो. राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम से ... ८
गोपाष्टमी ९
उत्तन कृषी संशोधन संस्था १०
उ. व.सं. संस्था के बहुपयोगी उत्पाद १६
श्रीगुरुजी : दृष्टि और दर्शन १७

संपादकीय

आओ फिर से दीप जलायें

अक्टूबर माह में दीप जलाकर हमने दीपावली का त्यौंहार मनाया। ज्ञान का दीप हमारे जीवन के अंधियारे को दूर करता है। इसे सतत जलाये रखना है। इस अंक में हमने 'दो गीत' प्रस्तुत किये हैं 'आओ फिर से दीप जलायें' तथा 'है अंधेरी रात पर दीवा जलाना कब मना है?'

अक्टूबर में केशवसृष्टि में कई महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम संपन्न हुए। रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी में फिलॉसफी कांग्रेस का अधिवेशन जिसमें देश के विभिन्न प्रांत से बुद्धिजीवियों ने भाग लिया जिनमें श्री अमर्त्य सेन का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

केशवसृष्टि का सौभाग्य है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, कोंकण प्रांत का विशेष प्रशिक्षण वर्ग प्रतिवर्ष केशवसृष्टि में आयोजित किया जाता है। इस वर्ष भी यह कार्यक्रम अक्टूबर माह में संपन्न हुआ जिसमें १०२ शिक्षार्थिओं ने भाग लिया। लगभग गत ७५ वर्षों से संघके प्रशिक्षण वर्ग होते हैं। जिसमें हजारों की संख्या में शिक्षार्थी भाग लेते हैं अपने आप में शायद यह भी एक विश्व रेकार्ड हो!

केशवसृष्टि गौशाला में २६ अक्टूबर को गोपाष्टमी का कार्यक्रम धूमधाम से मनाया गया।

उपरोक्त सभी कार्यक्रमों के समाचार आप इस अंक में पढेंगे।

केशवसृष्टि द्वारा ६ नवम्बर २००९ को नेहरू सेंटर में शाम ६ बजे 'चाणक्य' के हिन्दी मंचन का कार्यक्रम होगा।

विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा १३ दिसंबर को मुंबई पहुंच रही है। इस यात्रा का स्वागत घाटकोपर, विलेपार्ले, गिरगांव तथा बोरीवली में किया जायेगा। केशवसृष्टि की तरफ से एक विशेष स्वागत समारोह किया जायेगा।

केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालय का एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम २५ अक्टूबर को भिवंडी, पालघर एवं वाडा में संपन्न हुआ।

भारत के चंद्रयान ने चंद्रमा पर पानी की खोज की। जो काम अमेरिका एवं रूस के वैज्ञानिक नहीं कर सके उसे हमारे 'इसरो' के वैज्ञानिकों ने कर दिखाया। केशवसृष्टिकी ओर से उनका हार्दिक अभिनंदन!

- सत्यदेव बंका

कार्यवाह की कलम से...

केशवसृष्टि में स्थित सभी सहयोगी संस्थाओं के कर्मचारी गण व विद्यार्थी यह एक बड़ा परिवार बन चुका है। छुट्टियों में अपने घर जाने से पहले इन सभी का दीपावली स्नेहमिलन केशवसृष्टि में बड़े उत्साह से हुआ।

आनेवाले दिनों में कई कार्यक्रमों का आयोजन केशवसृष्टि में होने जा रहा है। दि. २२ नवंबर २००९ को रामरत्ना विद्यामंदिर का वार्षिक क्रीड़ा दिवस तथा दि. १३ दिसंबर को विद्यालय का वार्षिक स्नेहमिलन संपन्न होगा। व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया में शारीरिक, बौद्धिक, कलात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं का विकास महत्त्वपूर्ण है। हमारे बच्चे न केवल पढाई किंतु अन्य विषयों में उत्कृष्ठता का प्रयास करते हैं यह इन कार्यक्रमों से प्रतीत होगा। आप सभी इसमें सहभागी होकर बच्चों की निपुणता की सराहना अवश्य करें।

दि. १२ और १३ दिसंबर के दिन स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु स्वैच्छिक कार्यसंगम रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी में संपन्न होने जा रहा है। संस्था को बढ़ाने के और संस्था के लिए कार्य को सुनिश्चित दिशा में समाज तक ले जाने में कार्यकर्त्ता की भूमिका अहम् होती है। समर्पित कार्यकर्त्ताओं को योग्य दिशा देकर उनकी दृष्टी को उन्नत करने तथा उचित मार्गदर्शन देने में रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

दि. १३ दिसंबर को ही विश्वमंगल गो ग्राम यात्रा मुंबई आ रही है।

केशवसृष्टि महोत्सव व वार्षिक श्री सत्यनारायण महापूजा सभी के लिये आकर्षण होते जा रहा है। दि. ८, ९ और १० जनवरी २०१० ऐसा तीन दिवसीय महोत्सव आयोजित होने वाला है। केशवसृष्टि की वार्षिक सत्यनारायण महापूजा का गत अनेक वर्षों से चला आ रहा प्रारूप बदल कर इसे समारोह का स्वरूप दिया जायेगा। आप सभी के सहभाग तथा सहयोग से केशवसृष्टि महोत्सव एक पारिवारिक मिलन के लिए बड़ा कार्यक्रम सिद्ध होगा।

– डॉ. श्रीकांत सर्वगोड – कार्यवाह, केशवसृष्टि ■

केशवसृष्टि में दीपावली स्नेहमिलन

केशव सृष्टि
दीपावली स्नेहमिलन

केशवसृष्टि में कार्यरत सभी संस्थाओं में आज अनेकों कार्यकर्त्ता कर्मचारी काम कर रहे हैं। उनके परिवारों के कारण यहां एक छोटासा गांव ही बस गया है। सभी कर्मचारियों में आपसी भाईचारा और सद्भाव बढ़े इस उद्देश्य से यहां हर उत्सव सार्वजनिक तौर पर मनाया जाता है।

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक ११ अक्तूबर २००९ को केशवसृष्टि में दीपावली स्नेहमिलन समारोह का आयोजन किया गया था। केशवसृष्टि परिसर में कार्यरत सभी संस्थाओं के निवासी कार्यकर्ता कर्मचारी और केशवसृष्टि कृषितंत्र विद्यालय के विद्यार्थी इस समारोह में सम्मिलित हुए थे।

केशव सृष्टि
पावली स्नेहमिलन

समारोह के प्रमुख अतिथि मा. श्री. भुपेंद्र भाई टांक जी के करकमलों से दीपप्रज्वलन कर समारोह प्रारंभ हुआ। छोटे बच्चे, विद्यार्थी और बड़ो ने भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सहभाग लिया। केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालय के विद्यार्थियों ने विविध मनोरंजनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कृषि विद्यालय की छात्राओं द्वारा बनायी गयी रंगोली सभी को आकर्षित कर रही थी।

अंत में आभार प्रदर्शन के बाद मनोहर आतिषबाजी और स्नेहभोज के साथ समारोह समाप्त हुआ।

केशवसृष्टि में प्राथमिक संघ शिक्षा वर्ग

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्य प्रणाली में नियमित प्रशिक्षण का विशेष महत्त्व है। पूरे वर्षभर में देश के विविध प्रांतों में नियमित रूप से संघ शिक्षा वर्ग का आयोजन होता रहता है। इसी शृंखला में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कोकण प्रांत का प्राथमिक संघ शिक्षा वर्ग दि. २१ अक्तूबर से २८ अक्तूबर २००९ को केशवसृष्टि में संपन्न हुआ। कोकण प्रांत की विविध शाखाओं से कुल १०३ स्वयंसेवक शिविर में सहभागी हुए थे। शिबिर में शिविरार्थिओं के शारीरिक, मानसिक विकास के साथ साथ बौद्धिक विकास हेतु भी विभिन्न कार्यक्रम और बौद्धिक सत्रों का आयोजन किया गया था।

रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी से

रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. प्रमोद महाजन की जयंती के उपलक्ष्य में कै. वामनराव ओक रक्तपेढी, ठाणे के सहयोग से ३० अक्तूबर २००९ को रक्तदान शिबिर का आयोजन किया गया था।

शिविर का उद्घाटन स्वर्गीय प्रमोद महाजनजी की धर्म पत्नी श्रीमती रेखा महाजनजीने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रतिवर्ष प्रबोधिनी की ओर से प्रबोधिनी स्थापना दिन पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता है।

इस शिविर में केशवसृष्टि परिसर स्थित सभी संस्थाओं ने सहभाग लिया। कुल ४८ बोतल रक्त संकलित किया गया। केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालय के विद्यार्थियों ने भी स्वयंस्फूर्ती से रक्तदान किया।

मासिक प्रतिवेदन – अक्तूबर २००९

दि. २-४ अक्तूबर २००९ को एस.एन.डी.टी. महिला विश्व विद्यालय के प्रशासकीय कर्मचारी प्रशिक्षण वर्ग रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी के ज्ञान-नैपूण्य केंद्र में संपन्न हुआ। इसमें ३६ प्रतिभागी (पुरुष २४, महिला १२) सम्मिलित हुए थे। इस वर्ग का उद्घाटन एस.एन.डी.टी. महिला विश्व विद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. मधु मदन इनके कर कमलों से दीप प्रज्वलन से हुआ।

इस वर्ग में विश्व विद्यालय और संबंधित कानून, विश्व विद्यालय में मेरी भूमिका, कार्यसंस्कृति, संयम नियोजन, आपसी तालमेल, जानकारी तंत्रज्ञान का प्रशासन कार्यमें उपयोग, संवादकुशलता एवम् संघ निर्माण आदि विषयोंपर सर्वश्री मिलिंद मराठे, डा. एम.आर. कुरूप, अरविंद रेगे, आनंद भागवत तथा श्रीमती मीना शिलेदार इन महानुभावों ने मार्गदर्शन किया तथा प्रशिक्षण वर्ग का समापन रा.म्हा. प्रबोधिनी के महानिर्देशक डा. विनय सहस्त्रबुद्धेजीने किया।

संस्था बांधणी सहयोग योजना

स्वयंसेवी संस्था एवम् पदाधिकारी प्रशिक्षण वर्ग दि. १० से १२ अक्तूबर, २००९ को प्रबोधिनी की ओर से संस्था बांधणी सहयोग योजना (IBSS) इस संस्थाओं के लिए एक उपयुक्त उपक्रम का आयोजन किया गया था।

इसमें ५ संस्थाओं से १५ प्रतिभागी सम्मिलित हुए थे। संस्था के पदाधिकारियों ने अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषयोंपर मार्गदर्शन तथा चर्चा की गयी; जैसे संस्था ओर अपनी भूमिका, संस्था के कामकाज में व्यवसायनिष्ठता, संस्था के मिशन, व्हिजन और संस्था संगठन की संकल्पना, संस्थाओं के कार्य में कानून का दायरा, संस्था के कामकाज में आर्थिक अनुशासन, मिडिया संबंधी दृष्टीकोण, वेबसाईट का निर्माण, आदि विषयोंपर डा. विनय सहस्रबुद्धे, विवेक अत्रे, प्रमोद कुलकर्णी, संजय डोंगरे, मिलिंद आरोलकर, तथा रवींद्र साठे इन महानुभावोंने विशेष मार्गदर्शन किया।

''आओ फिर से दिया जलाएं''

भरी दुपहरी में अंधियारा,
सूरज परछाँई से हारा,
अंतरतम का नेह निचोड़े, बुझी हुई बाती सुलगाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं।
हम पड़ाव को समझें मंजिल
लक्ष्य हुआ आंखो से ओझल,
वर्तमान के मोहजाल में आनेवाला कल न भुलाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं।
आहुति बाकी, यज्ञ अधूरा,
अपनो के विघ्नों ने घेरा,
अंतिम जय का वज्र बनाने, नव दधीचि हड्डियां गलाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं।

अटल बिहारी वाजपेयी

आपके अभिप्राय

आपके कार्यों का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। आपके इस पुण्यप्रद कार्य के लिए शतशः धन्यवाद! सहकार्य के लिए आप कभी भी संपर्क कर सकते हैं।

पराग क. नेरूरकर चारकोप, कांदिवली (प.), मुंबई -६७

आज दि. २.१०.२००९ शुक्रवार को केशवसृष्टि एवं राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम में दूध सागर ज्येष्ठ रहिवासी संघ के ३९ सदस्यों ने भेंट दी। केशवसृष्टि के नयनरम्य नैसर्गिक वातावरण वनौषधी विभाग गौशाला आदि देखकर सभी को समाधान हुआ। राजपुरिया वानप्रस्थ आश्रम अत्यंत स्वच्छ व सुंदर है। ज्येष्ठ नागरिकों के लिए ऐसी सुंदर व्यवस्था का आपने निर्माण किया है इसके लिए धन्यवाद! आपके कार्य के लिए आभारपूर्वक शुभेच्छा!

डा. बी.डी. उन्डाळे– सचिव

दूध सागर ज्येष्ठ रहिवाशी संघ, दूध सागर सोसायटी, गोरेगांव (पू.) मुंबई - ६५

नमो नमः।

अध प्रथमम् एव अस्माभिः 'केशव सृष्टि' तथा 'वानप्रस्थाश्रम स्थलदर्शनं कृतम। मुम्बापुरी निकटे एवं एतत् विलोभनीय स्थानं द्रष्टवा मानसं प्रसन्न जातम्। ऐतादृशी सुव्यवस्था अतीव सुन्दरा। शुभं भवतु।

संजय वि रानडे, नरेश मिस्त्री, धीरज सुवर्णा

मैं अपना परम सौभाग्य समझता हूं कि नवरात्रि का पारायण पूरा करके आज मुझे केशवसृष्टि गौशाला में गौमाता के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। नवरात्रि के उपवास के पश्चात गौमाता का दर्शन अर्थात् सारे ब्रह्मांड का दर्शन।

सुमन वेदक

आज दि. ३ अक्टूबर को मैंने और मेरे सहकारियों ने केशवसृष्टि गौशाला को भेंट दी। सचमुच यह हमारा सौभाग्य था कि हम इस पवित्र स्थान पर आए। आज हम गर्व से कह सकते हैं कि गाय हमारी माता है। यहाँ अतिथि सत्कार एवं गौसेवा की व्यवस्था मनपूर्वक की जाती है।

दशरथ बारबोले, दिपक तळेले, डॉली जैन, चैताली महाले

(विद्यार्थी पद्मश्री डॉ. डी. वाय पाटील युनिवर्सिटी, डिपार्टमंट ऑफ बिजनेस मॅनेजमेंट, बेलापूर)

अमृतवचन

जो व्यक्ति जितना महान होता है, उतनी ही कठिन परीक्षाओं से उसे गुजरना पड़ता है। उन की कसौटी पर घिस कर खरा उतरने के बाद ही दुनिया उसकी महानता स्वीकार करती है, उसे महान मानती है। – ***स्वामी विवेकानंद***

ज्ञान गंगा

धर्म लोपो महांस्तावत्
कृते ह्य प्रतिकुर्वतः।
अर्थलोपश्च मित्रस्य नाशे
गुणवतो महान्॥

अर्थ : मित्र के किए हुए उपकार का यदि अवसर आने पर भी बदला न चुकाया जाय तो धर्म की हानि तो होती है। गुणवान मित्र के साथ मित्रता का नाता टूट जाने पर अपने अर्थ की भी बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ती है।

श्रीमद् वाल्मिक रामायण से

'अंधेरे का दीपक'

है अंधेरी रात पर
दीया जलाना कब मना है?
कल्पना के हाथ से कमनीय
जो मंदिर बना था,
भावना के हाथ से जिसमें
वितानों को तना था,
स्वप्न ने अपने करों से
था जिसे रुचि से संवारा,
स्वर्ग के दुष्प्राप्य रंगों से
रसों से जो सना था
ढ़ह गया वह तो जुटाकर
ईंट, पत्थर, कंकडों को
एक अपनी शांति की
कुटिया बनाना कब मना है।
है अंधेरी रात पर
दीया जलाना कब मना है?

- हरिवंश राय बच्चन

किसनगोपाल राजपुरिया वानप्रस्थ आश्रम से...

किसनगोपाल राजपुरिया वानप्रस्थ आश्रम को मिला 'लायन्स क्लब ऑफ मिलेनियम का विशेष सहयोग।'

दि. ४ अक्तूबर २००९ रविवार को किसनगोपाल राजपुरिया वानप्रस्थ आश्रम में लायन्स क्लब ऑफ मिलेनियम के सदस्य सहपरिवार पधारे। वानप्रस्थ आश्रम के अध्यक्ष श्री योगेंद्रजी राजपुरिया ने आगंतुकों का हार्दिक स्वागत पुष्पगुच्छ देकर किया। श्री योगेंद्रजी राजपुरिया ने सभी सदस्यों को वानप्रस्थ आश्रम की जानकारी दी। इस अवसर पर श्री योगेंद्रजी ने बतलाया कि लायन्स क्लब ऑफ मिलेनियम जिसके की वे स्वयं संस्थापक एवं पूर्व अध्यक्ष रहे हैं ने पहले भी वानप्रस्थ आश्रम को अपना सहयोग दिया है। क्लब के वर्तमान अध्यक्ष श्री महेंद्रजी ने इच्छा प्रगट की कि यदि वानप्रस्थ आश्रम को किसी तरह के सहयोग की आवश्यकता हो तो क्लब उसे पूरा करेगा। तदानुसार वानप्रस्थ आश्रम ने अपने दो भवनों के लिए सोलार वाटर हिटिन्ग सिस्टम की आवश्यकता का निवेदन क्लब को दिया जिसे क्लब ने सहर्ष स्वीकार किया। इस समारोह में लायन्स क्लब के अध्यक्ष श्री महेंद्रजी ने इस निमित्त ४०,०००/- (चालीस हजार) की राशि का चेक वानप्रस्थ आश्रम के अध्यक्ष श्री योगेद्रजी राजपुरिया को सुपुर्द किया।

इस अवसर पर वानप्रस्थ के निवासियों द्वारा भजन गायन तथा कविता पाठ किया गया। क्लब के सदस्यों ने भी सामूहिक रूप से सुंदर भजन गायन प्रस्तुत किया।

क्लब के अन्य सदस्य लायन दिनेश मोदी, लायन राजकुमार गुप्ता, लायन आनंद अग्रवाल, लायन महेंद्र आर्य, लायन नरेश दोशी, लायन दिलीप चौरसिया आदि ने भी अपना व्यक्तिगत सहयोग वानप्रस्थ आश्रम की स्नेह भोजन योजना में प्रदान किया। सभी अतिथियों ने वानप्रस्थ आश्रम की व्यवस्था एवं गतिविधियों की हृदय से सराहना की और ज्येष्ठ नागरिकों की अच्छी देखभाल के लिए संचालक मंडल को बधाई दी। अंत में व्यवस्थापक मंगेश अभंग द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

दि. १० अक्तूबर को उमंग फाऊंडेशन के १५ व्यक्ति वानप्रस्थ आश्रम में आए। उन्होंने भजन और भक्ति गीत गाये तथा निवासियों के लिए रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये। निवासियों के दरवाजों पर दीप जलाए, रंगोली सजाई और मिठाई का वितरण किया। भोजन के पश्चात निवासियों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम किए और ११०० रुपये का योगदान स्नेह भोजन योजना में दिया।

श्री नरेश जोशी ने ५०००/- रुपये की धनराशि वानप्रस्थ आश्रम को प्रदान की।

१३ अक्तूबर २००५ से सोलार सिस्टम का कार्य लायन्स क्लब ऑफ मिलेनियम के सहयोग से शुरू हुआ और एक सप्ताह में पूर्ण हुआ।

१७ अक्टूबर को दीपावली का त्यौहार धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर शिवध्यान मंदिर एवं संपूर्ण आश्रम को सजाया गया। भक्ति वेदांत के प्रतिनिधियों ने भजन, गीत एवं कहानियाँ प्रस्तुत की। आश्रमवासियों ने रंगोली सजाई, दीप जलाये और प्रसन्नता पूर्वक फटाके जलाये।

शाम को दीप पूजन और लक्ष्मीपूजन का कार्यक्रम संपन्न हुआ। सभी ने लक्ष्मीपूजन के प्रसाद और मिठाईयों का आनंद लिया।

प्रत्येक शनिवार को आश्रमवासियों को रामरत्ना विद्या मंदिर के सामने स्थित विद्याप्रद हनुमानजी के दर्शन कराये जाते हैं।

संचालक मंडल, व्यवस्थापक एवम् श्री किसन गोपाल राजपुरिया परिवार की तरफ से निवासियों की सुविधा के लिए हर तरह से प्रयास किये जाते हैं।

योगेंद्र किसनगोपाल राजपुरिया
– अध्यक्ष

गोपाष्टमी महोत्सव

केशवसृष्टि गौशाला में कार्तिक शुद्धी अष्टमी सोमवार २६ अक्टूबर गोपाष्टमी के दिन गौ-पूजन का भव्य आयोजन किया गया। प्रातः ६ बजे से ही गौ प्रेमी गौशाला में आने लगे। अपने साथ लाए विभिन्न प्रकार की हरी सब्जिया एवं अन्य खाद्य पदार्थ बड़े प्रेम व उत्साह से गायों को खिलाते रहे। गायों को खिलाने के लिए गौशाला की ओर से लड्डू बनाकर रखे गए थे जो गौ प्रेमियो को निःशुल्क दिए जा रहे थे। गौ भक्तों के लिए गाय के दूध की छाछ निःशुल्क दिन भर उपलब्ध थी जो विशेष आकर्षण का केंद्र रही। प्रसाद रूप में बुन्दी भी सभी को दी जा रही थी। दान देने वालों का भी दिनभर तांता लगा रहा।

प्रातः गौशाला के अध्यक्ष श्री देवकीनंदन जी जिंदल व मंत्री श्री राजूजी आपटे ने सैंकड़ो गौ भक्तों के साथ गाय का पूजन मंत्रोचार के साथ करके गौ-पुष्टी महायज्ञ किया एवं पंडितजीने सभी गौ प्रेमियो को प्रसाद एवं शुभाशीर्वाद दिया। दोपहर १ बजे से 'सुंदरकाण्ड महिला मंडल' द्वारा संगीतमय सुंदर काण्ड का पाठ एवं भक्तिमय भजनों का कार्यक्रम हुआ।

इस बार दो सत्रों में श्री उत्तम जी माहेश्वरी ने गाय की उपयोगिता के साथ ही गाय के दूध, दही, घी, गौ मूत्र और गोबर से बने उत्पादों की महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने स्वयं के अनुभवों को बताते हुए कहा कि १५ मिनट में लकवा ठीक हो सकता है, कोमा में गया आदमी कुछ घण्टों में होश में आ सकता है, एक दिन में कमर दर्द ठीक हो सकता है, साईनस, शूगर व जोड़ो का दर्द ही नहीं केन्सर तक गौ-उत्पादों द्वारा ठीक हो सकता है। उनको इन. नं. २८४६३४३९ पर संपर्क किया जा सकता है।

विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा की ओर से गौ प्रदर्शनी एवं गौ-हत्या बन्दी के लिए हस्ताक्षर अभियान का आयोजन रखा गया। गौ-ग्राम यात्रा विजयादशमी २८ सप्टेंबर कुरुक्षेत्र से आरंभ हो चुकी है, इसका समापन १९ जनवरी २०1० को नागपूर में होगा। १०८ दिनों में २०,००० कि.मी. यह यात्रा ठाणे जिले में १२ दिसंबर एवं मुंबई १३ दिसंबर को पहुंचेगी। इस यात्रा में सभी सहभागी बनें इस संबंध में अधिक जानकारी के लिए साहित्य का भी वितरण किया गया।

गोपाष्टमी महोत्सव की तैयारी के लिए २५ सदस्यों की एक समिति बनाई गई थी जिसके अथक प्रयासों से गोपाष्टमी मेला सफल हुआ। आनेवाले अनेक बंधुओं ने गौशाला परिसर की साफ सफाई, सजावट कार्यक्रमों की संरचना एवं मीरा-भाईंदर महानगरपालिका के परिवहन विभाग के बसों द्वारा आने-जाने की व्यवस्था की सराहना की। अनेक बंधुओं ने गायों की सुंदर व्यवस्था व अच्छी देखभाल के लिए केशवसृष्टि गौशाला से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की प्रशंसा की।

महावीर प्रसाद शर्मा
संयोजक -गोपाष्टमी
आयोजन समिति,
केशवसृष्टि गौशाला

कु. मयुरी उमेश राऊळ हीचे नेत्रदीपक यश

क्रीडा व युवक सेवा संचालनालय, महाराष्ट्र पुणे व जिल्हा क्रीडा परिषद, अहमदनगर आणि अहमदनगर जिल्हा तलवारबाजी असोसिएशन यांच्या संयुक्त विद्यमाने अहमदनगर येथे दिनांक ८ ते १० ऑक्टोबर २००९ दरम्यान राज्यस्तरीय शालेय तलवारबाजी स्पर्धा आयोजित करण्यात आली होती. या स्पर्धेत मुंबई शहरातून निवडण्यात आलेली एकमेव स्पर्धक कु. मयुरी उमेश राऊळ हीने बाँझ पदक पटकावून विजय संपादन केला.

कु. मयुरी ही उत्तन कृषी संशोधन संस्थेच्या सल्लागार समितीचे सन्माननीय सदस्य श्री. उमेश राऊळ आणि मुंबईच्या महापौर डॉ. शुभा राऊळ यांची कन्या असून ती दहावीत शिकत आहे.

उत्तन कृषी संशोधन संस्था व केशवसृष्टी यांच्याकडून कु. मयुरीचे व तीच्या आई वडीलांचे हार्दिक अभिनंदन आणि तिच्या भावी यशस्वी शैक्षणिक व क्रीडा कारकिर्दीसाठी मनःपूर्वक शुभेच्छा!

उत्तन कृषी संशोधन संस्था

कोकण विजय बंधारा प्रशिक्षण संपन्न

डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि विद्यापीठ दापोली जि. रत्नागिरी व प्रादेशिक भात संशोधन केंद्र पालघर यांच्या संयुक्त विद्यमाने पालघर येथे शनिवार दि. २६.९.२००९ रोजी 'कोकण विजय बंधारा' या विषयावर प्रशिक्षण संपन्न झाले. दापोली विद्यापीठाचे मृद व जल संधारण विभागाचे विभाग प्रमुख प्रा. दिलीप महाले यांनी लोकसहभागातून जलसंधारण (जल हेच जीवन) या विषयाला अनुसरून ''कोकण विजय बंधारा' कसा तयार करावा याची माहिती दिली.

सुमारे ७२० कि.मी. लांबीचा समुद्र किनारा लाभलेल्या कोकणात मान्सूनच्या कालावधीत दरवर्षी ३५०० ते ४००० मि.मी. एवढा पाऊस पडतो. वैशिष्ट्यपूर्ण भूस्तरीय आणि भौगोलिक रचनेमुळे पावसाचे जवळजवळ ६५ ते ८० टक्के पाणी अपधावेच्या स्वरूपात वाहून जाते. त्यामुळे मुबलक पर्जन्याच्या या प्रदेशात उन्हाळ्यात तीव्र पाणी टंचाई जाणवते. जल संधारणाच्या तात्पुरच्या प्रचलित उपचारांच्या बांधकामास लागणाऱ्या रासायनिक खतांच्या तसेच सिमेंटच्या गोण्या मिळविणे दिवसेंदिवस कठीण होत चालले आहे. तसेच गाभा भिंती बांधण्यास लागणाऱ्या सुपीक मातीची धूप होते. प्रचलित तात्पुरत्या उपचारांचे वरील मर्यादा तसेच जलसंधारणाची निकड लक्षात घेता कोकण विभागासाठी पर्यायी उपाययोजना करणे अत्यावश्यक होते. यासाठी डॉ. बाळासाहेब सावंत कोकण कृषि विद्यापीठ, दापोली अंतर्गत मृद आणि जलसंधारण अभियांत्रिकी विभागाने 'कोकण विजय बंधारा' विकसित केला आहे. नाना पात्रात उपलब्ध असलेल्या लहान के मध्यम आकाराच्या दगडांच्या वापर करून कुशल कामगारांच्या मदतीशिवाय कोकण विजय बंधारा बांधता येतो. नाल्याच्या प्रवाहाच्या दिशेने बंधारा वरच्या बाजूने प्लॅस्टिक अस्तरित

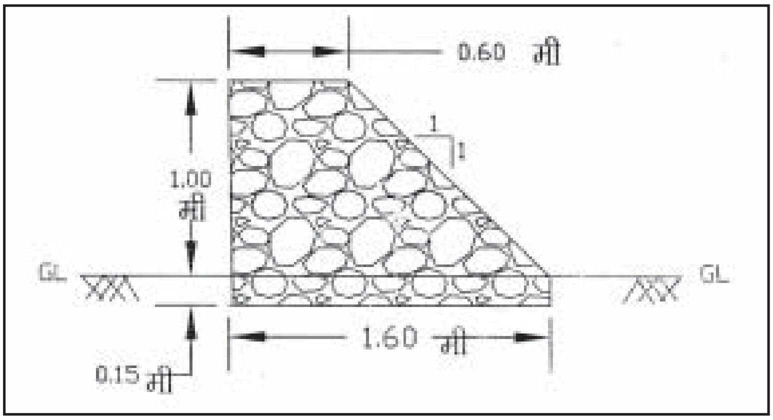

केल्यास अपधावेच्या पाण्याचा साठा ४५ ते ६० दिवसांपर्यंत उपलब्ध करणे शक्य आहे. कोकण विजय बंधाऱ्याच्या बांधकामाचा खर्च रु. १०४ प्रति मीटर एवढा असून प्रचलित बंधाऱ्यापेक्षा कमी खर्चिक आहे. बांधकामास सोपा असलेला हा कोकण विजय बंधारा एकाखाली एक साखळी पद्धतीने लोकसहभागातून कोकणात प्रभावीरित्या उपयोगात आणता येऊ शकतो.

अ) जागेची निवड

१. नाल्याचा उतार ३ टक्यापेक्षा कमी असावा.

२. वळणालगतची जागा नसावी.

३. नाला साधारणतः १० ते २० मीटर खोल असावा.

४. नालाकाठ सुस्पष्ट असावेत

ब) बांधकामासाठी लागणारे साहित्य

१. दगड किंवा धोंडे (साधारण मोठ्या आकाराचे)

२. ७५ जी.एस.एम. प्लॅस्टिक कापड

क) फायदे

१. नाल्यातून वाहून जाणाऱ्या मातीची धूप थांबते

२. लोकसहभागातून जल संधारण साधता येते.

३. खर्च कमी लागतो.

४. कुशल मनुष्यबळाची आवश्यकता नाही.

५. दरवर्षी पुन्हा पुन्हा बांधावा लागत नाही फक्त दरवर्षी नियमित देखभाल आणि दुरुस्ती याला पुरेशी आहे.

६. प्लॅस्टिक आच्छादन केल्यामुळे पाणी अडविले जाते. निर्माण झालेल्या जल साठ्याचा वापर रब्बी पिकास सिंचनासाठी करता येतो.

७. भूगर्भात पाण्याचे पुर्नभरण होऊन परिसरातील विहिरींच्या पाण्याच्या पातळीत लक्षणीय वाढ होते.

ड) कोकण विजय बंधाऱ्याची कामाची पद्धत

१. नाल्यातील जमिनीच्या प्रकारानुसार साधारणपणे ०.१५ मीटर ते ०.३० मीटर खोल व १.६ मीटर रूंद पायाचे खोदकाम करावे. पाया तसेच नाल्याच्या दोन्ही काठाच्या साधारणतः ०. ५० मीटर आत खोदाचे की जेणेकरून दगड आणि धोंडे आतमध्ये घट्ट बसून बंधाऱ्याला मजबूती देतील.

२. पायामध्ये दगड व्यवस्थित रचून सांधेमोड पद्धतीने थर करावे.

३. नाल्याच्या खोलीनुसार बांधाची उंची साधारणतः ०५. ते १.५ मीटर ठेवावी.

४. बांधाची भिंत व्यवस्थित रचून झाल्यावर बांधाच्या वरच्या बाजूस प्लॅस्टिक कापड साधारण ७५ जीएसएम चे टाकावे. व त्यावर माती/दगड टाकावेत म्हणजे ते तळास चिकटून राहील.

५. अशा पद्धतीने कोकण विजय बंधारा पावसाळा संपताना, शेतातील ओढे, लहान नाले, यातील प्रवाहाचा वेग मंदावल्यावर सप्टेंबर –ऑक्टोबर महिन्यात बांधावेत.

६. नाल्यामध्ये एका खाली एक साखळी पद्धतीने कोकण विजय बंधारे बांधावेत.

या प्रशिक्षण वर्गाला केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालयाच्या वतीने श्री. माधव माळी, कृषि सहाय्यक उपस्थित होते. कोकण विजय बंधाऱ्याचे प्रात्याक्षिक विद्यालयाच्या सर्व विद्यार्थ्यांना देण्यात आले. त्यानुसार त्यांनी केशवसृष्टि प्रक्षेत्रातील नाल्यावर असा बंधारा बांधण्यात आला.

केशवसृष्टी कृषी तंत्र विद्यालय

माजी विद्यार्थी/पालक, शिक्षक व पदाधिकारी यांचे दिवाळी स्नेहमिलन मेळावे संपन्न

उत्तन कृषी संशोधन संस्था संचालित केशवसृष्टि कृषी तंत्र विद्यालयाचे ठाणे जिल्ह्यातील माजी विद्यार्थी/विद्यार्थिनी, त्यांचे पालक तसेच शिक्षकवृंद आणि संस्थेचे पदाधिकारी व कृषि-प्रेमी यांचे दिवाळी स्नेहमिलन मेळावे रविवार दिनांक २५ ऑक्टोबर २००९ रोजी भिवंडी, पालघर आणि वाडा या तालुकानिहाय केंद्रांवर संपन्न झाले.

भिवंडी केंद्र : या केंद्रात अंबरनाथ, भिवंडी, कल्याण, शहापूर, वसई या तालुक्यातील व ठाणे, नवी मुंबई व मुंबई या शहरातील एकूण १९ विद्यार्थी/विद्यार्थिनी व पालक उपस्थित होते. तसेच संस्थेचे पदाधिकारी सर्वश्री विनीत गोयंका व रामगोपाल अगरवाल, प्राचार्य श्री सदानंद सामंत, सहाय्यक प्राध्यापिक कु. संगीता होलमुखे व कृषि सहाय्यक श्री. आनंदा जाधव आणि मायक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशनचे व्हाईस प्रेसीडेंट श्री. रविंद्र प्रताप सिंग हे उपस्थित होते.

पालघर केंद्र : या केंद्रात डहाणू, पालघर व तलासरी या तालुक्यातील एकूण १९ विद्यार्थी/विद्यार्थिनी व पालक उपस्थित होते. तसेच संस्थेचे पदाधिकारी सर्वश्री प्रकाश राजाध्यक्ष, घनःशाम बागवे, रामनिवास कामठिया व कृषी सहाय्यक सर्वश्री चेतन ठाकूर, अभय चौधरी व सौ. मनिषा जाधव आणि कृषि-प्रेमी श्री. रविंद्र रहाळकर हे उपस्थित होत.

वाडा केंद्र : या केंद्रात जव्हार, मोखाडा, विक्रमगड व वाडा तालुक्यातील एकूण २५ विद्यार्थी/विद्यार्थिनी व पालक उपस्थित होते. तसेच संस्थेचे पदाधिकारी सर्वश्री जयवंत (दादा) वाडेकर व नंदकुमार जोशी, कृषी पर्यवेक्षक श्री. प्रसाद गोसावी, कृषी सहाय्यक श्री. माधव माळी आणि वाडा पंचायत समितीचे कृषी अधिकारी श्री. शिवानंद तुकाराम पाटील व पालसई-खानीवलीचे कृषी जाणकार श्री. आशिष नरेश समर्थ हे उपस्थित होते.

वरील तीनही केंद्रामध्ये उपस्थित असलेल्या विद्यार्थी/विद्यार्थिनी व पालक यांच्यापैकी बऱ्याच जणांकडे शेती असल्याने आणि काहींचा शेती पूरक व्यवसाय असल्याने आपापल्या शेतात किंवा व्यवसायात प्रत्यक्ष काम करताना केशवसृष्टी कृषी तंत्र विद्यालयातून घेतलेल्या शेती शिक्षणाचा व त्या अनुशंगाने मिळालेल्या प्रात्यक्षिकांचा व कार्यानुभवाचा खूप कायदा झाल्याचे सर्वच विद्यार्थ्यांनी व पालकांनी आवर्जून सांगितले व स्वानुभव कथन केले.

श्री. सुजय सोनावणे (भिवंडी केंद्र) या विद्यार्थ्याने स्वतःचा लॅन्डस्केपींग अँड गाईनिंगचा व्यवसाय सुरू केला असून जुन्नर येथे पाच एकर क्षेत्रावर ऊस पीकासाठी ड्रीप इरीगेशनचा यशस्वी प्रयोग केला आहे. तसेच सीताफळ, नारळ या फळझाडांची यशस्वी लागवड केली असून तुळशीची १०० रोपे तयार करून छोटेखानी नर्सरीही सुरू केली आहे.

कुमारी योगिता देशमुख (पालघर केंद्र) या विद्यार्थिनीच्या पालकांची सातारा येथे ४० एकर शेती असून तेथे द्राक्ष पीक घेतले जाते. मात्र पुरेशा पाण्याअभावी पीकाची हानी होत असल्याचे लक्षात येताच आपल्या कृषी ज्ञानाच्या व कार्यानुभवाच्या जोरावर कुमारी योगिताने कुटुंबियांच्या मदतीने आपल्या शेतात १२ फूट खोल शेत तळ्याची योजना यशस्वीपणे राबविली आणि या सिंचनातून द्राक्ष पीकाला नवीन उभारी दिली. परिसरातील शेतकऱ्यांनीही शेत तळे योजनेचे अनुकरण केले.

कुमारी पल्लवी राऊत (पालघर केंद्र) या विद्यार्थिनीच्या सहकार्याने तिच्या यजमनांनी (श्री. रविंद्र पाटील) आपल्या डहाणू येथील शेतावर शासनाची तलाव योजना अंमलात आणली व या

तलावात ते मत्स्योत्पादन (रोहू, कटला) करीत आहेत. तसेच गांडूळ खत प्रकल्पही ते यशस्वीपणे राबवित आहेत.

कुमारी सुमित्रा लहांगे (पालघर केंद्र) या विद्यार्थिनीने पावसाळी भातशेती, उन्हाळी भाजीपाला लागवड व शोभेच्या झाडांची लागवड यशस्वीपणे केली आहे.

कुमारी मनिषा रोज (पालघर केंद्र) या विद्यार्थिनीने जवाहर जातीच्या पेरूवर यशस्वीपणे कलमे केली.

श्री. राकेश अधिकारी (वाडा केंद्र) हा विद्यार्थी वाडा येथील एका फार्म हाऊसचा केअर टेकर म्हणून काम करतो. तसेच त्याने आपल्या शेतात मत्स्य तलाव तयार केला असून त्यात कटला, रोहू या माशांचे यशस्वी उत्पादन घेत आहे. आंबा लागवड केली असून रोपवाटीका विकासाचे काम सुरू केले आहे. यात विविध औषधी वनस्पतींचे संग्रहालय करून कृषी पर्यटनाला चालन देण्याचा त्याचा मानस आहे.

श्री. प्रशांत पाटील (वाडा केंद्र) हा विद्यार्थी गार्डनिंगची कामे करतो. तसेच त्याच्या पालकांची २८ एकर जमीर असून कुटुंबाला पुरेल इतकी भात लागवड केली जाते तर रब्बी हंगामात चवळी, तीळ, मूग, तूर यांचे उत्पादन घेतले जाते. माळरानावर सागाची लागवड करण्यात आली आहे.

तीनही केंद्रांवर संस्थेचे पदाधिकारी, सदस्य आणि शिक्षकवृंद यांनी उपस्थित विद्यार्थी/पालकांना गांडूळ खत निर्मिती, सेंद्रिय शेती, भात शेतीच्या आधुनिक पद्धती, औषधी/सुगंधी व संवर्धन, पाणी व्यवस्थापन, कृषी पर्यटन या विषयांचे महत्त्व सांगून याबाबतची अधिक माहिती दिली. तसेच सरकारी योजनांची माहिती नजिकच्या तालुका किंवा मंडळ कृषि अधिकाऱ्यांकडून प्राप्त करावी व या योजनांचा स्वतःच्या समुदायाच्या उत्कर्षासाठी लाभ घ्यावा असे आवाहन केले. तसेच आपापल्या विभागात/गावात सहकारी कृषी संस्था स्थापन करून सहकारी शेतीची व शेती पूरक व्यवसायाची कामे करून परस्परांचा विकास साधावा असेही आवाहन केले.

भिवंडी केंद्रावर विद्यार्थी/पालकांना मार्गदर्शन करण्यासाठी मायक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशनचे व्हाईस प्रेसीडेंट श्री. रविंद्रप्रताप सिंग हे उपस्थित होते. कृषी क्षेत्राच्या सर्वांगीण वाढीसाठी संगणक आणि संगणक प्रणाली खूपच सहाय्यकारी असल्याचे सांगून त्याच्या उपयोग्यतेची विद्यार्थी/पालाकांशी मुक्त संवादाद्वारे त्यांनी खुलासेवार माहिती दिली.

वाडा केंद्रावर विद्यार्थी/पालकांना मार्गदर्शन करण्यासाठी पंचायत समितीचे कृषी अधिकारी श्री. शिवानंद तुकाराम पाटील उपस्थित होते. त्यांनी जगभर जाणवणारा अन्नधान्य व फळ-भाजीपाल्याचा तुटवडा याचा संदर्भ देऊन शेतीचे व शेतकऱ्यांचे महत्त्व सर्वांना समजावून सांगितले. ज्यांच्याकडे आज शेत जमीन किंवा वरकस जमिन आहे त्यांना भविष्यकाळात खूप महत्त्व प्राप्त होणार असल्याने यापुढे कोणीही आपली जमीन विकू नये. कृषी व कृषी पूरक व्यवसायांचा शास्त्रोक्त अभ्यास करून, आधुनिक तंत्रज्ञानाचा अवलंब करून, कष्ट करण्याची जिद्द बाळगून आणि सकारात्मक विचारांची कास धरून शेतकऱ्यांच्या तरूणपिढीने आणि कृषि प्रेमींनी कृषी व कृपी पूरक व्यवसायांकडे स्वतःला झोकून द्यावे असे त्यांनी आवर्जून आवाहन केले. कृषि विषयक संशोधनाची, नवनवीन प्रयोगांची व सरकारी योजनांची अद्ययावत माहिती घेऊन आणि आपल्या गावात/विभागात बचत गट किंवा कृषि विज्ञान मंडळ तयार करून या क्षेत्रात काम केल्यास आपले व आपल्या देशाचे भवितव्य उज्ज्वल करू शकू असा विश्वास त्यांनी उपस्थितांना दिला.

पालसई-खानीवलीचे कृषी जाणकार श्री. आशिष नरेश समर्थ हे सुद्धा

या केंद्रात उपस्थित होते. त्यांनी जैविक खत निर्मिती व त्याच्या सहाय्याने करायची सेंद्रीय शेती आणि परदेशी भाजीपाला लागवड (उदा. ब्रोकोली, चेरी, टोमॅटो, रेड/चायनीज कॅबेज) याबाबत खुलासेवार माहिती दिली. देशी गाईंचे महत्त्व व गाईच्या शेण-मूत्राची चांगल्या शेतीसाठी असलेली उपयुक्तता त्यांनी विषद केली व देशी गाईंचे संगोपन करण्याचे आवाहन केले. कृषी पूरक व्यवसायापैकी मत्स्योत्पादन, इमू/ससा/लावारी/कोंबडी पालन यांची सविस्तर माहिती दिली. कमळाच्या शेतीचे महत्त्व व उपयुक्तता त्यांनी समजावून सांगितली आणि कमळ, वॉटर लिली व स्पायडर लिली यांच्या उत्पादनातून चांगले उत्पन्न मिळतेच पण पर्यावरण संतुलनही साधता येते असे सांगितले.

वाडा येथील प्रयोगशील शेतकरी व संस्थेचे सदस्य श्री. जयवंत (दादा) वाडेकर यांनी उपस्थितांना शास्त्रोक्त पद्धतीने भात लागवड करण्याबाबत माहिती दिली. तसेच भात लागवड करताना उद्‌भवणाऱ्या समस्यांचे निराकरण करण्याचे उपायही सूचविले. त्यांनी विकसित केलेल्या भात लागवडीची गोळी पद्धत आणि शेत कामासाठी आवश्यक असलेली सुधारीत यंत्रे व अवजारे (उदा. चिखलणी यंत्र, भात लागवड यंत्र, टोकन यंत्र, गोळी यंत्र, मिक्सर, मिनी पॉवर टिलर व गांडूळ खताचा संगाडा) यांची प्रात्यक्षिकासह त्यांनी उपस्थितीतांना माहिती दिली.

कृषी व कृषी पूरक व्यवसायांसाठी शासनाने आखलेल्या योजना गाव पातळीवर शेतकऱ्यांपर्यंत पोहोचत नसल्याची खंत सौ. भानुमती पाटील (भिवंडी केंद्र) या पालकांनी व्यक्त केली व याबाबतीत संस्थेने विशेष प्रयत्न करावेत असे सूचविले. विद्यालयातून उत्तीर्ण होणाऱ्या विद्यार्थ्यांना नोकरी, व्यवसाय व स्वयंरोजगाराच्या संधी उपलब्ध करून देण्यासाठी संस्थेने मदत केंद्र सुरू करावे अशी सूचना कुमारी योगिता देशमुख (पालघर केंद्र) या विद्यार्थिनीनीने मांडली. मुंबई शहर व उपनगरे, नवी मुंबई, ठाणे व पनवेल शहरात फोफावणाऱ्या सिमेंटच्या जंगलामध्ये टेरेस गार्डनिंगला विशेष महत्त्व येऊ लागले असून संस्थेने टेरेस गार्डनिंगचे शॉर्ट टर्म कोर्सेस सुरू करावेत असे श्री. प्रशांत पाटील (वाडा केंद्र) या विद्यार्थ्याने सूचविले. श्री. सुजय सोनावणे (भिवंडी केंद्र) या विद्यार्थ्याने माजी विद्यार्थ्यांनी फोनच्या माध्यमातून परस्परांशी संपर्कात रहावे व महिन्यातील एका रविवार सर्वांनी केशवसृष्टीत येऊन परस्परांना भेटून एकमेकाला सहकार्य करावे असे आवाहन केले आणि याकामी स्वतः पुढाकार घेण्याची तयारी दाखविली. याव्यतिरिक्त बऱ्याच पालकांनी फुलशेती, फळ प्रक्रिया केंद्र, कृषी सेवा केंद्र, औषधी व सुगंधी वनस्पतींची लागवड, परदेशी भाजीपाला लागवड, मत्स्योत्पादन, कोळंबी उत्पादन, कमळशेती (लोटस फार्मिंग), इमू पालन याबाबतची सविस्तर माहिती मिळविण्यासाठी सूचना केल्या.

वरील सर्व सूचनांबाबत संस्था आपल्या कार्यकारी मंडळ बैठकीत व चिंतन बैठकीत विचार करून निर्णय घेईल व त्यानुसार कार्यवाही करण्यात येईल असे पदाधिकाऱ्यांकडून सांगण्यात आले.

गोमाता ही आपल्या धार्मिकतेचे व संस्कृतीचे प्रतिक असून मानवतेचे आरोग्य-रक्षण आणि कृषि संवर्धन करणारी ती एक निसर्गदत्त बहुमोल देणगीच आपल्याला लाभली आहे. तीचे संरक्षण व संवर्धन व्हावे यासाठी विश्वमंगल गौ ग्राम यात्रा दिनांक

२८.०९.२००९ (विजयादशमी) पासून कुरूक्षेत्र येथून सुरू झाली आहे. १०८ दिवसात २०,००० किमी भ्रमणानंतर तीचे समापन दिनांक १९.१०.२०१० रोजी नागपूर येथे होणार आहे. दिनांक १२ व १३ डिसेंबर २००९ रोजी ही यात्रा अनुक्रमे पनवेल-ठाणे व मुंबई येथे असेल. या यात्रेची सविस्तर माहिती पदाधिकाऱ्यांनी उपस्थितांना दिली आणि गोवंशहत्याबंदीसाठी कठोर कायदा व्हावा म्हणून कोटी कोटी संख्येने देशबांधवांचे स्वाक्षरी/अंगठा असलेले पत्र महामहीम, राष्ट्रपतींना सादर करायचे असल्याचे सांगितले. या पत्रावर सर्वांनी स्वाक्ष्ऱ्या कराव्यात तसेच आपले नातेवाईक, मित्र परिवार व गावकरी बंधू-भगिनींच्या सह्या/अंगठे घेऊन या स्वाक्षरी पत्राचे समर्पण दिनांक १४.१२.२००९ रोजी काशिमिरा येथे आगमन होणाऱ्या यात्रेत करावे व या उपक्रमात मोठ्या संख्येने प्रत्यक्ष सहभाग घ्यावा असे पदाधिकाऱ्यांनी सर्वांना आवाहन केले.

सर्व विद्यार्थी/विद्यार्थिनी व पालक हे संस्थेचे व विद्यालयाचे प्रतिनिधी असून कृषी क्षेत्राच्या विकासकार्यासाठी व समाजकार्यासाठी राबवायचे उपक्रम सर्वांनी परस्पर सामंजस्याने व सहकार्याने कार्यान्वित करावेत असे पदाधिकाऱ्यांनी सर्वांना आवाहन केले. याच अनुशंगाने आपल्या विभागातील/गावातील पाचवी इयत्ते पर्यंतच्या मागासवर्गीय व आर्थिक दुर्बल घटकातील विद्यार्थी/विद्यार्थिनींना मोफत दप्तर देण्याची योजना सेवा-सहयोग फाऊंडेशनच्या सहाय्याने राबविण्याचा संस्थेचा मानस असून अशा विद्यार्थी/विद्यार्थिनींची किंवा शाळांची माहिती संस्थेला सादर करण्याची विनंती पदाधिकाऱ्यांनी सर्वांना केली.

विद्यालयातर्फे आयोजित करण्यात आलेले हे विद्यार्थी/ पालक, शिक्षक व पदाधिकारी यांचे दिवाळी स्नेहमिलन मेळावे आयोजित करून संस्थेने स्तुत्य उपक्रम राबविल्याचे आणि अशाप्रकारचे स्नेहमिलन मिळावे वेळोवेळी आयोजित करावेत ज्यामुळे विद्यार्थी व पालकांना कृषी क्षेत्राची अद्ययावत माहिती मिळेल तसेच तरूणांमध्ये या क्षेत्राचे आकर्षण वाढून कृषीला विशेष चालना मिळेल असे काही विद्यार्थ्यांनी व पालकांनी नमूद केले. त्यानंतर परस्परांमध्ये दिवाळी शुभेच्छांचे आदान-प्रदान होऊन व परस्परांचे आभार व्यक्त करून या दिवाळी स्नेहमिलन मेळाव्यांचा समारोप करण्यात आला.

■

महामृत्युंजय मंत्र

ओ३म्-त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

अर्थ - हम लोग (सुगन्धिम्) जो शुद्ध गंध युक्त, (पुष्टिवर्धनम्) शरीर, आत्मा और समाज के बल को बढ़ाने वाला (त्र्यंबकम्) रूद्ररूप जगदीश्वर है, उसी की (यजामहे) निरंतर स्तुति करें। इनकी कृपा से (उर्वारुकमिव) जैसे खरबूजा फल पक कर (बंधनात्) लता के बंधन से छूटकर अमृत के तुल्य होता है, वैसे हम लोग भी (मृत्योः) प्राण व शरीर के वियोग से (मुक्षीय छूट जावें और (अमृतात्) मोक्ष सुख से (मा) कभी भी अलग न होवें।

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था के बहुपयोगी उत्पाद

हर्बो टी

पैकींग ८० ग्राम

मूल्य - रू. २०/-

घटकद्रव्य -

सौंफ - अजीर्ण, अगिनमांद्य, में उपयुक्त होती है। कासश्वास में लाभकर है।

सोंठ - यह वातशामक है, अरुचि, अग्निमांध, अजीर्ण दूर करती है। प्रतिश्याय में भी उपयुक्त है।

पिप्पली - अग्निदिपक, तृप्तिघ्न, शूलनाशक है। यकृत विकार, प्लिहावृद्धि में उपयुक्त है।

ल्वक् - (दालचिनी) यह हृदयोत्तेजक रक्तशोधक है। श्लेष्महर होने से कास श्वास में उपयुक्त है।

तमालपत्र - कफ नाशक है।

लवंग - श्लेष्महर, श्वासहर है। रक्तविकार में उपयुक्त है।

जायफल - शिरःशूल संधिशोथ में उपयुक्त

कृमिरोगो में उपयुक्त है। मुखवैरस्थ, अग्निमांध, अजीर्ण में अशस्त माना गया है।

तुलसी जंतूनाशक है। कफ विकार में उपयुक्त है।

पूनर्नवा - मूत्रल है। मूत्रकृच्छ में उपयुक्त राशिरोग अग्निमांद्य, उदररोग में उपयुक्त है।

शतावरी - रसायन वृष्य खल्य है।

शतावरी - रसायन वृष्य, बाल्य है। शिरोरोग, वातव्याधि दौर्बल्य में उपयुक्त है।

श्रेष्ठमध - वातविकार में लाभदायक, बुद्धिवर्धक तथा शिरोरोग में उपयुक्त है।

गोक्षूर - वेदना स्थापक, वातशामक है। अश्मरीनाशक मूत्रघ्न है।

शरपुंखा - यह शोधहर, कुष्ठघ्न, विषघ्न, जन्तुघ्न है। मुत्रघ्न और रक्तशोधक है।

ब्राह्मी - रक्तशोधक मेथ्य, आक्षेपहर है। वेदना कम करती है।

अर्जुन - हृदय है - हृदयरोग रक्तविकार में उपयुक्त है। प्रमेह में उपयुक्त है ।

नागरमोथा - यह त्वत्र दोबहर, शोथहर है। मेथ्य और नाडियों के लिए बाल्य है।

उपयुक्तता - इसमें इस्तेमाल की गयी सभी औषधी वनस्पतियाँ शरीर के सभी संस्थाओं पर काम करती है। मूत्रविकार, श्वासविकार आदि में उपयुक्त है। मधुमेही रुग्ण इसका प्रयोग कर सकते हैं।

मात्रा - ५ ग्राम हर्बोटी १ कप पानी में उबालकर छान के पीना। शक्कर या दूध की जरूरत नहीं।

दिन में दो या तीन बार पी सकते है।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

डॉ. श्रुती वारंग, उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था, केशवसृष्टि - २८४५०७०२

बोधकथा

रामशास्त्री प्रभुणे अत्यंत ही सादगीपूर्वक रहते थे और यही शिक्षा उन्होंने अपनी पत्नी को भी दी थी। साथ ही अपनी पत्नी से यह अपेक्षा भी रखते थे कि वह अत्यंत सादगी पूर्वक रहे। एक बार किसी उत्सव पर उनकी पत्नी को पेशवा के अंतःपुर से निमंत्रण आया। वापस जाते वक्त रानी ने अन्य स्त्रियों की तरह उन्हें भी बहुमूल्य वस्त्र और अलंकार पहनाकर विदा किया। यद्यपि रामशास्त्री प्रभुणे की धर्मपत्नी ने बहुत मना किया परंतु रानी के आग्रह को टाल न सकी और बहुमूल्य गहने, कपडे पहनकर अपने घर पहुंची।

रामशास्त्री अपने घर के दरवाजे पर खडे पत्नी की राह देख रहे थे। पत्नी को बहुमूल्य गहने कपडो में आते देखकर दरवाजा बंद कर लिया पत्नी ने दरवाजा खटखटाया।

कौन है? - अंदर से रामशास्त्री ने पूछा।

मैं - जबाब मिला।

मैं कौन?

आपकी पत्नी?

तुम मेरी पत्नी नहीं हो। मेरी पत्नी बहुमूल्य गहने कपड़े नहीं पहनती। रामशास्त्री ने दरवाजा नहीं खोला। पत्नी बेचारी लज्ञित होकर राजमहल में गई। अपने पति के स्वभाव से रानी को परिचित कराया और विनयपूर्वक वस्त्र और अलंकार वापस किए तथा अपने रोज के कपड़े पहनकर घर वापस आयी।

रामशास्त्री प्रभुणे ने सादे वस्त्रों में पत्नी को देखकर उसका प्रेमपूर्वक स्वागत किया।

समाज के ऋणी क्यों, ऋणमोचन कैसे ?

ऋणमोचन क्यों ?

पश्न- हम ऐसा क्यों कहते हैं कि अपने समाज को संगठित करने के इस पवित्र कार्य हेतु अपने-आपको समर्पित करने के लिए हम कर्तव्य-बद्ध हैं? उत्तर- हम सबने इस समाज में जन्म लिया है और इसी में हमारा पालन-पोषण हुआ है। हमारे व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन की सुखमयता एवं सुरक्षा इस समाज में जन्म लेने के कारण संभव हुई है। एक अन्य महत्त्वपूर्ण विचार भी है। हमारा एक प्राचीन तथा अमर समाज है, जिसने जीवन के सभी क्षेत्रों मे महानतम व्यक्तियों को जन्म दिया है तथा सर्वोत्कृष्ट दर्शन एवं पवित्रतम सामाजिक मानदंडों को विकसित किया है। जगत् पर उस महानता की छाप आज तक भी देखी जा सकती है। अन्य लोग इस भूमि के एक पुत्र - राम, कृष्ण और शंकराचार्य की संतति के रूप में उल्लेख करते हैं, जिसके रक्त में उन सब प्रख्यात पूर्वजों के गौरवमय कीर्तिमान गुणों की धारा प्रवाहित है, जो ज्ञान तथा कर्तृत्व के प्रत्येक क्षेत्र के जगद्गुरु रहे हैं।

यह सब प्रकट करता है कि हिंदू-समाज में हमारे जन्म ने हमें एक सुखदायी शारीरिक अवलंब के अतिरिक्त यह सब अनुपम प्रतिष्ठा प्राप्त कराई है तथा हमारे लिए आत्माओं द्वारा किए उन्नत शिखरों पर पहुँचने का मार्ग प्रशस्त किया है।

अमिट ऋणी

इस प्रकार हम कितने ही रूपों में अपने समाज के अमिट ऋणी हैं। इस अवस्था में क्या हमारे लिए यह योग्य है कि हम इसके प्रति अपने कर्तव्यपालन की चिंता किए बिना इसके पुण्यों तथा फलों का उपभोग मात्र करते रहें ? हमारे शास्त्रों में यह कहा गया है कि एक मनुष्य को उतने पर ही निर्भर रहना चाहिए, जितना उसके पास समाज को समर्पित करने के पश्चात् शेष रहता है। इस प्रकार हमारा प्रथम कर्तव्य यह है कि हम अपने को कृतज्ञता के उस ऋण-भार से मुक्त करें। इसी में हमारे जीवन की सार्थकता है।

ऋणमोचन कैसे ? जीवनभर सेवा से

अब वह कौन-सा साधन है, जिससे हम उस ऋण को चुका सकते हैं? एक यथार्थ भक्त परमेश्वर से कहता है- ’हे भगवान! मैं तेरी पूजा कैसे करूँगा? पुष्प, चंदन तथा जल - सब तेरे ही तो हैं। तू ही तो उस दीपक की दीप्ति है, जिससे मैं तेरी आरती करता हूँ। सब कुछ तेरा ही है। जो कुछ तूने मुझे दिया है, उसको ही तेरे चरणों में अर्पित कर तेरा दीनतम सेवक बने रहने के अतिरिक्त मेरे पास और रास्ता ही क्या है?‘ प्राचीनकाल से ही अपने समाज को ईश्वर का जीवंत स्वरूप वर्णित किया गया है। हमें भी उस स्वरूप को अपना इष्ट देवता स्वीकार करना चाहिए तथा अपने ऋण-भार से मुक्ति के लिए, जीवन-भर उसकी सेवा करने का निश्चय करना चाहिए।

कमी दूर करना ही सेवा

सेवा के अनेक तथा विभिन्न प्रकार संभव हैं। भूखे को भोजन देना, अज्ञानी को ज्ञान देना, रोगी को औषधि देना - ये सब सेवा के प्रकार हैं, अर्थात् यथार्थ सेवा से तात्पर्य है कि जिसकी सेवा करना है, उसमें जो कमी है, उसे दूर करना। आज हमारा समाज अज्ञान, गरीबी, छुआछूत, अनैतिकता आदि का एक अति पीड़ादायी चित्र प्रस्तुत करता है। हम उन अनेक प्रयासों को भी देखते हैं जो इन कमियों को दूर करने के लिए व्यक्तियों द्वारा सदुद्देश्य से किए जा रहे हैं। यह स्वाभाविक भी है कि हममें उनके प्रति सद्भावना उत्पन्न हो, परंतु प्रश्न यह है कि क्या हम इन प्रयासों को सेवा का वही सही प्रकार कह सकते हैं, जिसकी हमारे समाज को आज अतीव आवश्यकता है? क्या वे हमारे समाज का अंतत: स्थायी कल्याण कर सकेंगे? शरीर पर एक के बाद एक उठते हुए फोडे का उपचार एवं मल्हम-पट्टी करना व्यर्थ होगा, जब रक्त ही दूषित हो गया हो। जब मूल कारण का उपचार किया जाएगा, तभी व्याधि दूर होगी।[1]

स्थायी सेवा

स्पष्टत: समाज की सेवा का सर्वोत्तम प्रकार यही है कि राष्ट्रीय चेतना एवं एकत्व के अभाव के मूलभूत रोग को दूर किया जाए और एक सशक्त, सुसंगठित, आत्मचेतनापूर्ण तथा आत्मनिर्भर राष्ट्रजीवन निर्माण किया जाए। जड़ों के प्रति दुर्लक्ष्य करते हुए केवल फलों का आनंद लेते रहने की आशा करना व्यर्थ होगा। इसमें संदेह नहीं कि रोग से दूषित होने पर भी वृक्ष कुछ समय तक फल देता है, परंतु वे फल अस्वास्थ्यकर, शुष्क तथा स्वादरहित होंगे यदि हम जड़ों के प्रति दुर्लक्ष्य करते चले जाएँगे, तो कुछ समय के पश्चात् ये फल भी अदृश्य हो जाएँगे और वृक्ष का सूखा और नंगा तना मात्र ही खड़ा दिखाई देगा। यदि हम जड़ों की चिंता करेंगे, तो फल की चिंता करने की आवश्यकता नहीं। इसलिए हमें अपनी राष्ट्रीय जड़ों को गहरे तक ले जाने का प्रयत्न करना चाहिए, वही स्थायी सेवा होगी और स्थायी ऋणमोचन।[2]

१. खंड ११ पृ. २१५, २१६
२. खंड ११ पृ. २३२

साभार : श्री गुरुजी : दृष्टि और दर्शन

केशवसृष्टि

आगामी आयोजन

१. **रामरत्ना विद्यामंदिर वार्षिक क्रीडा दिवस**
दि. २२ नवंबर २००९
स्थान : केशवसृष्टि

२. **रामरत्ना विद्यामंदिर वार्षिक स्नेहमिलन**
दि. १३ दिसंबर २००९
स्थान : केशवसृष्टि

३. रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी द्वारा आयोजित
स्वेच्छिक कार्यसंगम – कार्यकर्ता निर्माण
(National Convention of Valuntary Organistions)
दि. १२ और १३ दिसंबर २००९
स्थान : रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी, केशवसृष्टि

४. गोरक्षा एवम् गोसंवर्धन हेतु देशव्यापी
विश्वमंगल गौ ग्राम यात्रा
मुंबई में १३ दिसंबर २००९

५. **केशवसृष्टि महोत्सव एवं सत्यनारायण महापूजा**
(भारतीय संस्कृति, कला, शिक्षा, कृषि एवं विज्ञान का अनूठा संगम)
दि. ८, ९ और १० जनवरी २००९

केशवसृष्टि के कार्य एवं विभिन्न उपक्रमों की अद्ययावत् जानकारी प्राप्त करने हेतू केशवसृष्टि संकेत स्थल को अवश्य भेंट करें।

Please log on to www.keshavsrushti.com

केशवसृष्टि, उत्तन, भाईंदर (प.),जि. ठाणे - ४०१ १०६ फोन : ०२२-२८४५०२४७, २८४५२८५५

स्वाध्याय मंत्र

ओ३म् सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै॥
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

हे सर्व रक्षक प्रभो! हम दोनों गुरू एवं शिष्य की रक्षा कीजिए। हमें आनंद का पान कराइये। हम दोनों में शक्ति का आधान कीजिए। हमारा ज्ञान राष्ट्रहित में तेजस्वी हो। हम आपस में कभी द्वेष न करें, विरोध न करें, अपितु अत्यंत प्रेम में पढ़े व पढ़ायें। हमें आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक तीनों प्रकार की शान्ति प्राप्त हो।

सुभाषित

आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति॥

आकाश से गिरा हुआ पानी जिस प्रकार समुद्र की ओर जाता है उसी प्रकार से किसी भी देव को किया हुआ नमस्कार केशव के ही प्रति जाता है।

तत्त्व को समझाने की सुभाषित की एक खास शैली होती है। अत्यंत परिचित एवं सीधे सादे उदाहरण से मूल तत्व को सरल रूप में अवगत कराने का कार्य सुभाषित करता है।

बादलों से वर्षा के रूप में पानी धरती पर आता है। पानी का गुण है गति करने का, प्रवाहित होने का। झरने के रूप में, नदी के रूप में पानी बहता है। किसी भी रूप में, किसी भी दिशा में बहते हुए भी पानी का अंतिम गन्तव्य समुद्र ही होता है। तालाब का पानी भी उसका अन्य उपयोग किये जाने के बाद समुद्र में ही मिलता है।

उसी प्रकार शिव को, गणेश को, हनुमान को, रामदेव पीर को, शीतला माता को, दुर्गा को अर्थात् किसी भी देवी देवता को किया हुआ नमस्कार अर्थात् किसी प्रकार से की हुई भक्ति, केशव को ही पहुंचती है, क्यों कि ये सभी देवीदेवता केशव के ही रूप हैं।

केशव भी प्रतीकात्मक हैं। केशव के स्थान पर राम, शिव, दुर्गा, गणेश, निर्गुण निराकार - कोई भी हो सकता है। पृथ्वी हो सकती है, आकाश हो सकता है, देश हो सकता है। अन्ततोगत्वा ये सब एक ही तत्त्व के आविष्कार हैं, अतः सर्व प्रकार की भक्ति के गन्तव्यस्थान हैं।

केशवसृष्टि में संपन्न आयोजनों की झलकियाँ

कोंकण प्रांत प्राथमिक संघ शिक्षा वर्ग

श्रीयुत दादा वाडेकरजी से आधुनिक कृषि तंत्र
की जानकारी लेते हुए विद्यार्थी, शिक्षक...

कोंकण प्रांत प्राथमिक संघ शिक्षा वर्ग

श्री दादा वाडेकर से मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए

कोंकण प्रांत प्राथमिक संघ शिक्षा वर्ग

श्री दादा वाडेकर से मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए

Regn. No. MH/MR/Thane (W) 06/2008-09.
RN-72232/99

विश्व मंगल गौ-ग्राम यात्रा

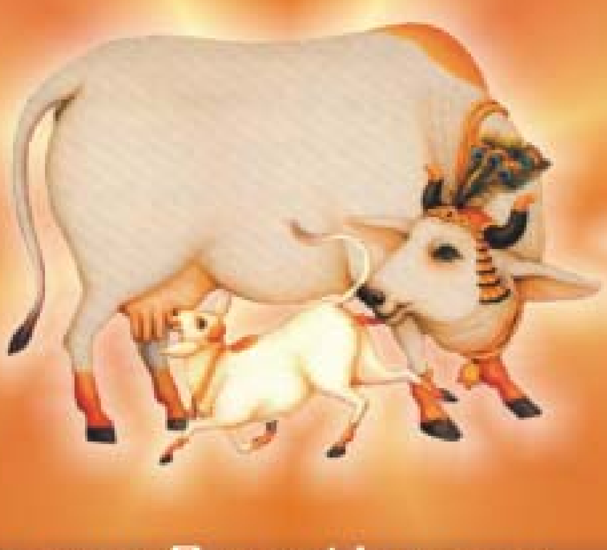

✻ हस्ताक्षर अभियान ✻ गोवंश रक्षा कानून
✻ अभयधाम–अभयग्राम ✻ सम्यक गावों का निर्माण

यात्रा आरंभ
विजयादशमी
३० सितंबर
स्थान
कुरुक्षेत्र

◆◆◆

यात्रा समापन
१७ जनवरी
२०१०
स्थान
नागपूर

◆◆◆

१०८ दिन
२०००० किमी

◆◆◆

कोकण प्रांत
में प्रवेश

७ दिसंबर
फोंडा (गोवा)
डिचोली

८ दिसंबर
सावंतवाडी
कुडाळ
रत्नागिरी

१२ दिसंबर
पनवेल–ठाणे

१३ दिसंबर
मुंबई

प्रेषक :
केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, ठाणे - ४०११०६
दूरभाष : २८४५०२४७, २८४१२८५५

प्रति,

यह पत्रिका मुद्रक एवं प्रकाशक सुरेश भगेरिया द्वारा केशवसृष्टि के लिए यूनिटी आर्ट ऑफसेट, ३०२, वडाला उद्योग भवन, वडाला, मुंबई - ४०० ०३१ से मुद्रित और केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, जि. ठाणे से प्रकाशित हुई है. - संपादक : सत्यदेव बंका

CMYK